



Design & Printed at Kumar & Company, Jaipur

75/-

ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
तीतरवाडाकलां, वाया-कुन्डल, दौसा-303 325 (राजस्थान)
Email-gvssdp@rediffmail.com
GVSS

पर्यावरण शिक्षण पुस्तिका - भाग 1

हमारी वृक्ष सम्पदा

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण सामग्री

हमारी वृक्ष सम्पदा

दृगपाल सिंह

ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
तीतरवाडाकलां, वाया-कुन्डल, दौसा-303 325 (राजस्थान)
Email-gvssdp@rediffmail.com

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

© GVSS ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान

प्रथम संस्करण	:	जनवरी 2004
लेखन	:	दृगपालसिंह
सहयोग	:	श्री पूर्णमल मीणा, वैद्य श्री शम्भु दयाल शर्मा
टिप्पणी	:	श्री आर एस भण्डारी, आई एफ एस, (सेवानिवृत्त) व श्री रामसिंह नरूका, वन अधिकारी
संपादन	:	श्री अशोक मुद्गल
परामर्श	:	श्री संतोष गुप्ता व डॉ. ओमप्रकाश कुलहरी
छाया चित्र	:	ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान व श्री हरिशंकर शर्मा
रेखाचित्र	:	महेन्द्र डढानिया
प्रकाशक	:	ग्रामीण विज्ञान सेवा संस्थान
परियोजना क्रियान्वयन	:	पर्यावरण शिक्षण केन्द्र, थलतेज टेकरा, अहमदाबाद
आर्थिक सहयोग	:	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
मुद्रक	:	कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

नोट : इस पुस्तक में छपी सामग्री तथा रेखा चित्र व फोटोज का उपयोग करने के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

अनुक्रमणिका

क्र. स.	वृक्ष का नाम	पृष्ठ सं.
1	अरडू	5
2	इमली	7
3	कदम्ब	9
4	करंज	11
5	काला खैर	13
6	कूमट	15
7	कचनार	17
8	कुटज	19
9	गून्दी	21
10	गूलर	23
11	जामुन	25
12	जंगल जलेबी	27
13	जंगली खजूर	29
14	तेन्दू	31
15	नीम	33
16	पीपल	35
17	पापड	37
18	पीलू	39
19	बेल	41
20	बकायन	43
21	बेर	45
22	बरगद	47
23	लैसवा	49
24	सँहजना	51
25	सेमल	53
26	सिरस	55
27	सीताफल	57
28	शीशम	59
29	हिंगोट	61
30	क्षेत्र में पाये जाने वाले वृक्षों की सूची	63

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

व्यावहारिक ज्ञान की पुस्तक शृंखला के प्रकाशन की यह प्रथम पुस्तक है। प्रस्तुत पुस्तक जमुवारामगढ अभ्यारण्य, (जयपुर) के वन क्षेत्र में पाये जाने वाले उपयोगी 29 वृक्षों की प्रजातियों के संम्बन्ध में लिखी गई है तथा प्रकाशित की जा रही है। पुस्तक में संकलित प्रजातियों का चयन इनकी उपलब्धता व उपयोगिता तथा संरक्षण के महत्व को ध्यान में रखकर किया गया है।

हम निम्न विद्यालयों के सभी अध्यापकों व प्रधानाध्यापकों के आभारी हैं, जिन्होंने इसके लिए समय दिया, ये विद्यालय हैं, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायसर, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नीमला, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, थली, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डांगरवाडा, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, महंगी, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, डगोता, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, श्रीनगर, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, गुवाडा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, लूनेठा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, राम्याला। हम वैद्य श्री बोदन लाल जी व स्थानीय गाँव के लोगों के भी आभारी हैं, जिन्होनें इन वृक्षों के उपयोग के सम्बन्ध में जानकारी दी। हम श्री भूपेन्द्रसिंह, श्री राधाकिशन, श्री रंगलाल, श्री गोपीराम, श्रीमती बिमला चौहान के आभारी हैं जिन्होंने जानकारी जुटाई तथा हम उन सभी महानुभावों के भी आभारी हैं जिन्होंने पुस्तक तैयार करने में अपने अमूल्य विचारों व सुझावों से पुस्तक को इस रूप में लाने व प्रकाशित करने में सहयोग किया।

यह पुस्तिका युवा व बच्चो में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने तथा व्यवहारिक ज्ञान वर्द्धन कर वृक्षों की उपयोगिता समझने में सहायक होगी। जिससे वे अपने पर्यावरण को समझ कर उसके संरक्षण के प्रति जागरूक बन सकेगें। इस पुस्तिका को पर्यावरण अध्ययन के विषय के लिए सहायक पाठ्य-पुस्तक के रूप में भी शामिल किया जा सकता है।

दृगपालसिंह

अरडू

अरडू के वृक्ष की ऊँचाई लगभग 20 से 25 मीटर होती है। इसका मुख्य तना 3 से 5 मीटर लम्बा होता है। इसकी छाल पीताभ श्वेत रंग की दरारों युक्त होती है। इसके छत्र का घेरा बडा तथा फैला हुआ होता है। इस वृक्ष की पत्तियाँ नीम की पत्तियों के समान परन्तु आकार में थोडी बडी व किनारों पर आरी के समान कटी हुई होती हैं। अरडू के पेड़ पर फरवरी व मार्च माह में छोटे-छोटे फूल गुच्छों में आते हैं। फूलों का रंग हरीताभ श्वेत होता है। अप्रैल माह में पतली व चपटी फलियाँ गुच्छों में लगती हैं। मई व जून माह में फलियाँ पक जाती हैं। पकने पर फलियों का रंग पीला मटमैला हो जाता है। इसकी लकड़ी को काटने पर पीले रंग की छाल निकलती है। इसकी लकड़ी मुलायम व वजन में हल्की होती है। यह तेजी से बढ़ने वाला वृक्ष है, जो कि 4 से 5 वर्षो में ही काफी बड़े आकार का हो जाता है।



अरडू की पत्तियाँ

अरडू की पत्तियाँ पशुओं के लिए उत्तम चारा होती हैं। इसकी पत्तियों को पशु बड़े चाव से खाते हैं। इस पेड़ की छाल को पानी के साथ पीस कर व दही में मिलाकर पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं। इसकी लकड़ी से प्लाईबोर्ड तैयार करके फर्नीचर बनाया जाता है। इसके अलावा इसकी लकड़ी से फल पैकिंग में इस्तेमाल हेतु पेटियाँ

Scanned with OKEN Scanner

बनाई जाती हैं। इस पेड़ की लकड़ी से रसोई घर में उपयोग होने वाला चकला-बेलन आदि सामान व दियासलाई की तीलियाँ व डिब्बियाँ तथा खिलौने बनाये जाते हैं। अरडू के पेड़ से गोंद भी प्राप्त होता है। यह गोंद औषधि बनाने में उपयोग होता है।

अरडू का पेड़ साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। परन्तु बलुई तथा दोमट मिट्टी में इसकी बढ़वार अच्छी होती है। किसान, अरडू के पेड़ को खेत के चारों और मेंड़ पर लगाते हैं।। इसका पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

अध्ययन करें अरडू का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसके फूलों पर कौन से कीट आते हैं? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

कौन-कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

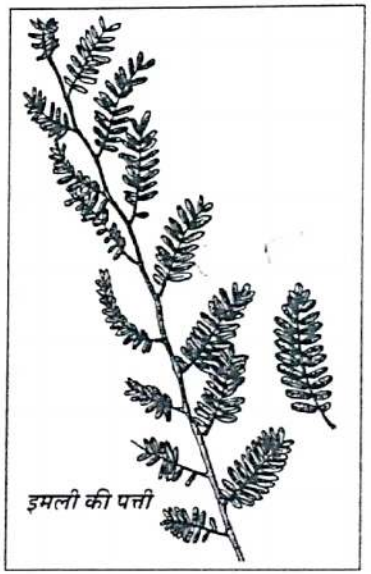
.....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

.....

इमली

इमली का पूर्ण विकसित वृक्ष बहुत विशाल होता है। इसकी ऊँचाई 20 मीटर तथा मुख्य तने की मोटाई 2 से 4 मीटर तक हो जाती है। इसका छत्र काफी फैला हुआ तथा घनी छाया वाला होता है। इसकी शाखाओं पर संयुक्त पत्तियाँ होती हैं। पत्तियाँ छोटे-छोटे पत्रकों से मिलकर बनती हैं। पत्रक आयताकार, चिकने व आगे से गोल होते हैं, तथा 10 से 20 के जोडों में होते हैं। इसके पत्तों का स्वाद खट्टा होता हैं। इमली का पेड़ सदा हराभरा रहता है। इसकी जड़ें जमीन में बहुत गहराई तक जाती हैं तथा अगल-बगल में काफी दूरी तक फैली हुई होती हैं। इसकी छाल लालिमा लिए भूरी होती है। जुलाई व अगस्त माह में पीताभ लाल रंग के फूल गुच्छों में आते हैं। इसके वृक्ष पर नवम्बर से दिसम्बर माह के मध्य में फलियाँ लगती हैं। जिन्हें कटारा या इमली कहते हैं। ये हमारी ऊँगलियों के पोरों की तरह गाँठदार होती हैं। कच्ची फलियाँ हरी तथा पकने पर भूरी कत्थई हो जाती हैं। इनमें खट्टा गूदा निकलता है। गूदे के अन्दर कत्थई रंग के आयताकार मोटे एवं कठोर बीज होते हैं।



इमली की पत्ती

इमली की लकड़ी चटख कर चिंगारी छोड़ती हुई जलती हैं, इसलिए अच्छा ईंधन नहीं होती। इसकी लकड़ी का उपयोग कोयला बनाने में भी किया जाता है,

Scanned with OKEN Scanner

इसका कोयला भी जलने पर चट-चट करके चिंगारी छोड़ता हुआ जलता है। इस कारण यह अच्छा नहीं माना जाता। इसकी पत्तियों को चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके फल का गूदा, खट्टी चटनी बनाने तथा दवाई बनाने में उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है। इसकी लकड़ी से खेती में उपयोग होने वाले औजारों के हत्थे बनाये जाते हैं। इसके बीजों से दवाईयाँ बनाई जाती हैं। इसकी छाया काफी घनी होती है। गर्मी के दिनों में पशु इसके नीचे आकर बैठते हैं।

इमली का पेड़ रेतीली तथा दोमट मिट्टी में अच्छी तरह से उगता है। अधिकतर यह समतल भूमि पर ही पैदा होता है। नमी वाली भूमि पर अच्छी तरह से उगता व बढ़ता है। इसका पौधा बीज के द्वारा तैयार किया जाता है।

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

इसके वृक्ष पर कौन से पक्षी घौंसला बनाकर रहते हैं? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसके नीचे कौन-कौन से पशु आकर बैठते हैं? .....

.....

इसके तने पर पाये जाने वाले कीटों को देखें व उनके नाम लिखें? .....

.....

कदम्ब

कदम्ब के पेड़ की ऊँचाई लगभग 10 से 12 मीटर तथा तने की मोटाई 2 से 3 मीटर की होती है। इसका मुख्य तना 3 से 5 मीटर लम्बा होता है। अधिकतर यह नदी व नालों के किनारों पर सजातिय वृक्षों के साथ झुण्डों में मिलता है। इस पेड़ की शाखाऐं लम्बी होती हैं। इसकी पत्तियाँ चौड़े आकार की व मुलायम होती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा होता है। इस पेड़ में जून से जुलाई माह में लौंग के आकार के फूल आते हैं, तथा बाद में छोटे-छोटे आकार के फल लगते हैं। फल कच्ची अवस्था में हरे होते हैं तथा पकने पर फल का रंग कत्थई लाल हो जाता है। इसकी जड़ें भूमि में बहुत गहराई तक जाती हैं।



कदम्ब की पत्ती व फूल

कदम्ब की पत्तियाँ गाय, भैंस, बकरी आदि जानवरों के चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी से अच्छी किस्म की मूर्तियाँ व फर्नीचर बनाये जाते हैं। कदम्ब की पत्तियों को गुमचोट व मोच पर बाँधने से सूजन दूर हो जाती है। इसकी लकड़ी ईंधन के रूप में काम आती है। जंगलों में अधिक कटाई की वजह से कदम्ब के पेड़ काफी कम हो गये हैं।

कदम्ब का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता

Scanned with OKEN Scanner

है। इसका वृक्ष ज्यादातर पहाड़ों व पठारी स्थानों में पाया जाता है। बीज से नया पौधा तैयार किया जा सकता है।

कौन से पक्षी इसके पेड़ पर बैठते हैं? .....

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

.....

इसकी भीतरी छाल का रंग कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

.....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

इसके पेड़ के नीचे कौन से जानवर बैठते हैं? .....

.....

इस वृक्ष की उपयोगिता पता करके लिखिए? .....

.....

करंज

करंज, मध्यम आकार का तेजी से बढ़ने वाला पेड़ होता है । इसकी ऊँचाई 12 से 18 मीटर तक हो जाती है। इसके पत्ते थोड़े चौड़े, मुलायम तथा चमकदार गहरे हरे रंग के होते हैं। पेड़ का ऊपरी घेरा काफी फैला हुआ होता है। इसकी छाया घनी होती है। छाल धूसर रंग की पतली तथा चिकनी होती है। छाल छीलने पर पीले रंग की निकलती है। करंज की पत्तियाँ मई माह में झड़ जाती हैं। मई व जून के मध्य नई पत्तियाँ आती हैं। इसके फूल नीलापन लिए गुलाबी रंग के होते हैं तथा नई पत्तियों के साथ गुच्छों में आते हैं तथा पूरे पेड़ पर छा जाते है। कच्ची फलियाँ हरे रंग की होती हैं। फलियाँ धीरे-धीरे पकती हैं तथा अप्रैल से जून माह के मध्य पूरी तरह पक जाती हैं। फलियाँ पकने पर भूरे कत्थई रंग की व लकड़ी की तरह कठोर हो जाती हैं। एक फली में प्रायः 1 ही बीज होता है । इसके बीजों में बहुत अधिक मात्रा में तेल होता है।



करंज की पत्तियाँ

करंज की पत्तियाँ चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं। इसकी लकड़ी से खिलौने तथा खेल का सामान व खेती के औजारों के हत्थे आदि बनाये जाते हैं । इसकी जड़ आँख के रोगों तथा चर्म रोगों की औषधी बनाने के काम में ली जाती है। इसके बीजों का उपयोग चमड़ा उद्योग में कुष्ठ रोग की दवाई बनाने तथा साबुन बनाने में होता है।

Scanned with OKEN Scanner

तेल निकालने के बाद बची हुई खली को खेतों में खाद व कीट नाशक के रूप में उपयोग करते है।

करंज का पेड़ पथरीली, कंकरीली व बलुई मिट्टी में आसानी से उग सकता है। इसकी बढ़वार क्षारीय तथा अम्लीय भूमि में भी अच्छी होती है। इसका वृक्ष प्रायः नदी-नालों के किनारों व घाटियों में तथा समतल भूमि पर मिलता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसकी फली को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसकी फली का आकार कैसा होता है? .....

इसकी नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसके फूलों पर कौन-कौन से कीट आते हैं? .....

.....

काला खैर

खैर का पेड़ मध्यम ऊँचाई वाला होता है। इसकी ऊँचाई 10 मीटर तक हो जाती है। मुख्य तने की मोटाई 1 से 2 मीटर तक होती है। इसकी शाखाओं पर आस-पास जुड़े हुए दो काँटे होते हैं, जो कि आधार पर चौड़े तथा ऊपर की और नुकीले होते हैं। इसकी जड़ें भूमि में काफी गहराई तक जाती हैं। जड़ें अगल-बगल में काफी फैली हुई होती हैं। जड़ों में नाइट्रोजन एकत्र करने वाले जीवाणुओ की छोटी - छोटी गाँठे होती हैं। ये जीवाणु हवा से नाइट्रोजन इकट्ठा करके जमीन में स्थिर करने में मदद करते हैं। छाल छीलने पर लालिमा लिए हुए भूरी निकलती है। पत्तियाँ फरवरी से मार्च माह में झड़ जाती हैं। नई पत्तियाँ मई माह में आती है। फूल पीलापन लिए सफेद होते हैं तथा जून से अगस्त तक रहते हैं। फलियाँ चपटी चिकनी तथा सर्दियों में पक कर गहरे कत्थई रंग की हो जाती हैं। फली में चार से पाँच बीज होते हैं।



काले खैर की पत्तियाँ व फलियाँ

खैर की लकड़ी बहुत कठोर व मजबूत होती है। लकड़ी का उपयोग ईंधन व कोयला बनाने में किया जाता है। पत्तियों का उपयोग चारे के रूप में किया जाता है। इसका गोंद दवाई बनाने में काम लिया जाता है। इसकी लकड़ी से खेती में काम आने

Scanned with OKEN Scanner

वाले औजारों के हत्थे बनाये जाते हैं। घर में आनाज कूटने के मूसल, रसोई घर में उपयोग होने वाला चकला व बेलन तथा तेल निकालने की घानी (कोल्हू) खैर की लकड़ी से बनाये जाते हैं। खैर की लकड़ी के बीच के गहरे बादामी रंग के भाग को उबाल कर कत्था बनाया जाता है। कत्था दवाई बनाने व पान में लगाने के काम आता है। इससे कत्थई रगं भी बनाया जाता है। जिसका उपयोग छपाई उद्योग में स्याही के रूप में किया जाता है।

खैर का पेड़, पहाड़ों की तलहटी में पथरीली तथा मुर्रम व बजरी मिली दोमट मिट्टी में अच्छा पनपता है। इसका पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

अध्ययन करें, खैर का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसकी भीतरी छाल का रंग कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसकी लकड़ी का क्या उपयोग किया जाता है? .....

.....

इसके गोंद का क्या उपयोग करते हैं? .....

.....

बीजों का रंग कैसा होता है? .....

इसकी पत्तियाँ कौन-कौन से पशु खाते हैं? .....

कूमट

यह पतझड़ी वृक्ष है। पहाड़ की तलहटी व ढलानों पर सजातीय वृक्षों के झुण्ड में पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी ऊँचाई लगभग 6 मीटर तक हो जाती है। तना गाँठ गठीला छोटा तथा ऐंठा हुआ होता है। इसकी छाल चिकनी व हल्की पीली हरी परतों में होती है। पत्तियाँ संयुक्त होती हैं। इनके आधार पर तीन कत्थई रंग के काटे होते हैं। जिनमे से दो पीछे की तरफ अंकुश की तरह मुड़े हुए तथा एक बीच वाला सीधा होता है। जनवरी से मार्च के मध्य पत्तियाँ झड़ जाती हैं। अप्रैल से मई के मध्य नई पत्तियाँ आती हैं। इसके फूल सुगन्धित व सफेद रंग के होते हैं, जो कि अगस्त से अक्टूबर के मध्य आते हैं। फलियाँ पतली व चपटी होती है, जो कि पहले हरी तथा पकने पर गहरे कत्थई रंग की हो जाती हैं। फली में बीजो की संख्या 5 से 6 होती है। बीज चिकने तथा चपटे व हरे भूरे रंग के होते हैं।



कूमट की पत्तियाँ

इसकी पत्तियाँ व फलियाँ चारे में काम आती हैं। बकरियाँ, गाय व भैंस आदि जानवर इन्हें बड़े चाव से खाते हैं। इसकी लकड़ी अच्छा ईंधन होती है। लकड़ी कृषि के औजारों के हत्थे बनाने में भी काम आती है। तने व शाखाओं पर आड़े कट लगाकर मई से जून माह में गोंद प्राप्त किया जाता है। गोंद का उपयोग कागज चिपकाने व दवाई

Scanned with OKEN Scanner



कूमट की फलियाँ

बनाने में होता है। कूमट के फूलों पर मधुमक्खियाँ बहुत अधिक आती हैं। इसकी जड़ की छाल से रस्सी बनाने का रेशा मिलता है। इसकी शाखाओं से खेतों की काँटेदार बाड़ बनाई जाती है।

कूमट का वृक्ष बजरी व कंकड मिली पत्थरीली मिट्टी में, पहाड़ की तलहटी व ढलान पर अच्छा पनपता है। इसमें सूखे को सहने की अद्‌भुत क्षमता होती है। यह कम पानी में भी जीवित रह सकता है। इसका नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

अध्ययन करें कूमट का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

कौन से कीट इसके वृक्ष के तने पर मिलते हैं? .....

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

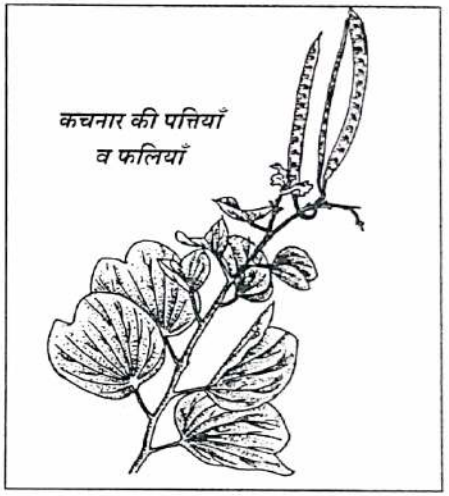
इसके फूलों पर कौन से कीट आते हैं? .....

इसके तने की भीतरी छाल का रंग कैसा होता है? .....

इसके गोंद का क्या उपयोग करते हैं? .....

कचनार

कचनार का वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है। इसकी ऊँचाई 5-8 मीटर तक हो जाती है। इसका छत्र गोल घेरदार होता है। इसका वृक्ष सुन्दर दिखाई देने के कारण सड़क के किनारे, बगीचों तथा घरों के आस-पास उगाया जाता है। लेकिन अधिकाशतः यह अकेला ही उगा हुआ पाया जाता है। यह जंगली अवस्था में भी उगा हुआ मिलता है। इसकी छाल गहरी भूरी तथा चिकनी होती है। इसकी पत्तियों का आगे वाला मध्य भाग गोलाई लिये हुए कटा हुआ होता है। जिससे ऐसा लगता है जैसे दो पत्ते आपस में मिले हुए हों। पत्तियाँ पीली पड़ कर झड़ने लगती हैं। इसके वृक्ष पर शरद ऋतु के मध्य में फूल व फल आते हैं। पुष्पकाल में पूरा वृक्ष फूलों से लद जाता है, जो कि अत्यन्त मनमोहक लगता है। पुष्प गुच्छों में आते है जिनका रंग लाल तथा हल्का बैंगनी होता है। जाति की विवधता के कारण फूल लाल, सफेद, पीले व बैंगनी रंग के हो सकते हैं। जिनमें हल्की सुगन्ध भी आती है। इसकी फलियाँ पतली, लम्बी व चपटी तथा आधा से एक फीट लम्बी तथा गुच्छों में होती हैं। फलियाँ हरिताभ कत्थई रंग की होती हैं। इनमें 6 से 8 चपटे बीज होते हैं।



कचनार की पत्तियाँ व फलियाँ

Scanned with OKEN Scanner

इसकी पत्तियाँ पशुओं के चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। जिससे चारपाई के पाये व कृषि औजारों के हत्थे बनाऐ जाते हैं। इसकी छाल गण्डमाला व चर्म रोग आदि अनेक रोगों में उपयोगी होती है। बवासीर में इसकी छाल का चूर्ण 3 माशा की मात्रा दिन में 2 बार सुबह व शाम मक्खन के साथ या मट्ठे के साथ देते रहने से खून आना बन्द हो जाता है। इसके फूलों की सब्जी व अचार बनाकर खाया जाता है। पूर्ण विकसित फूलों से गुलकन्द भी बनाया जाता है।

कचनार का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। यह पौधा मैदानी क्षेत्र में उगता है, परन्तु जंगलों में पहाड़ की तलहटी में भी पाया जाता है। इसके वृक्ष को सुन्दरता के लिए भी उगाते हैं। इसके बीज से नया पौधा तैयार किया जा सकता है।

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसकी फलियों को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

क्या, इसके फूलों में सुगन्ध आती है ? .....

इसकी फलियों के अन्य उपयोग लिखें? .....

.....

कुटज

कुटज के पेड़ की ऊँचाई लगभग 5 से 8 मीटर होती है। इसके तने की मोटाई लगभग 1 से 2 मीटर तक हो जाती है। इसका मुख्य तना 2 मीटर से अधिक लम्बा हो जाता है। इसके प्रत्येक भाग से चिपचिपा दूध जैसा सफेद तरल निकलता है। इसकी पत्तियाँ मध्यम आकार की तथा ऊपर से चिकनी व थोड़ी गद्देदार मुलायम होती हैं। जिनका रंग गहरा हरा होता है। पत्ते पीले पड़ कर झड़ जाते हैं, परन्तु इसके पत्ते एक साथ नहीं झड़ते। इसकी छाल धूसर रंग की होती है। इसके फूल सफेदी लिए हुए हल्के पीले रंग के होते हैं, जो कि 2 से 6 की संख्या में गुच्छो में आते हैं। इसकी फलियाँ गोल, पतली 1 से 2 फीट तक लम्बी, जोड़े में लगती हैं। आखिरी सिरे पर आपस में जुड़ी हुई होती हैं। इसकी फलियाँ कच्ची अवस्था में हरी तथा पकने पर गहरे भूरे रंग की हो जाती हैं। इसमें 8 से 10 की संख्या तक बीज होते हैं। बीज रूई जैसे रेशे के द्वारा आपस में जुड़े रहते हैं।



कुटज की पत्तियाँ व फलियाँ

कुटज के पत्ते चारे में उपयोग किये जाते हैं। इसकी लकड़ी कमजोर होती है। परन्तु ईंधन में इस्तेमाल की जाती है। इसका उपयोग पेट की बिमारियों, दस्त, ऑव, मरोड़ आदि में किया जाता है। इसके दूध की दो बूंद पशु के कच्चे दूध में डालने पर उसकी दही जम जाती है। पशु चराने वाले ग्वाल जंगल में इससे दही जमा कर खाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

इसका वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उग सकता है। यह पौधा पहाड़ी ढलानों पर उगा हुआ पाया जाता है। इसके बीज से नया पौधा तैयार किया जा सकता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

अध्ययन करें कुटज का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके अन्य उपयोग पता करके लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसकी फली को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसकी फली का आकार कैसा होता है? .....

पत्ती की ऊपरी व निचली सतह को छू कर देखें कैसी है? .....

.....

गूँदी

यह मध्यम ऊँचाई का वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 3 से 5 मीटर तक होती है। इसकी शाखाऐं मजबूत होती हैं। इसकी छाल कत्थई भूरे रंग की व कटी-फटी धारियों से युक्त होती है। इसकी पत्तियाँ चौड़ाई में डेढ़ ईंच तक तथा 3 से 4 ईंच लम्बी और आगे सिरे पर गोलाई लिए हुए होती हैं। पत्तियों की ऊपर व नीचे की सतह कुछ खुरदरी होती है। पत्तियाँ हल्के हरे रंग की होती हैं, जिन पर कहीं-कहीं कत्थई रंग के चकत्ते भी होते हैं। यह पतझड़ी वृक्ष है। इसके छोटे - छोटे हरिताभ सफेद रंग के फूल नवम्बर से दिसम्बर माह में गुच्छों में आते हैं। इसके फल गोल, 2 से 4 सेंटी मीटर तक मोटे तथा इतने ही लम्बे आकार का होते हैं। कच्चा फल गहरे हरे रंग का तथा पकने पर पीला, नारंगी हो जाता है। पके फल का गूदा लिसलिसा व चिपकने वाला, बहुत हल्की मिठास लिए लगभग फीके स्वाद का होता है। इसमें एक छोटी गुठली निकलती है। अब जंगल में इसके बहुत कम वृक्ष मिलते हैं। यह प्रजाति लगभग विलुप्ति के कगार पर है।


गूंदी की पत्तियाँ

इसकी लकड़ी मजबूत तथा लचीली होती है। जिससे कृषि उपकरणों के हत्थे

Scanned with OKEN Scanner



बनाये जाते हैं। इसकी पत्तियाँ बकरियों को चराने के काम आती हैं। सूखी लकड़ियाँ ईंधन के काम में ली जाती हैं। इसके फल दवाई बनाने में उपयोग होते हैं। बच्चे इसके फलों के चिपचिपे पदार्थ को कागज चिपकाने के काम में भी लेते हैं। कुछ लोग इसके फल को खाते भी हैं। मुँह में छाले होने पर इसके पत्ते चबाकर लार टपकाने से छाले ठीक हो जाते हैं।

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। इसका पेड़ कंकरीली तथा दोमट मिट्टी में आसानी से उग आता है। बीजों से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं।

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा लगता है? .....

इसके अन्य उपयोंग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

गूलर

गूलर के वृक्ष की ऊँचाई 20 से 25 मीटर हो जाती है। इसके मुख्य तने की लम्बाई 2 से 3 मीटर होती है। तने के ऊपर मोटी -मोटी हरीताभ श्वेत शल्कों युक्त शाखाऐं होती हैं। इसका तना ज्यादातर खोंखला होता है। इस पेड़ के पत्ते मध्यम आकार के लम्बे, गोल तथा हरे रंग के होते हैं। पत्तों पर कीटों के द्वारा छोटी -छोटी गाँठे बना दी जाती हैं। गूलर के तने का रंग सफेदी लिए हल्का हरा होता है। बसंत ऋतु में इसके पत्तों का रंग पीला हो जाता है। गूलर के पेड़ पर मार्च माह में फूल आता है जो बाद में अप्रैल माह में हरा कच्चा गोल नीबू के समान हो जाता है। और जून में इसका फल पक जाता है। जिसका रंग लाल - गुलाबी हो जाता है। फल का गूदा मीठा होता है। एक फल में लगभग 100 से 200 बीज होते हैं। इसके फलों में छोटे-छोटे उड़ने वाले कीट भी मिलते हैं, जो कि इसके परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



गूलर के पत्तों को आमतौर से पशुओं और जानवरों को नहीं खिलाते। परन्तु अकाल के समय में पत्तों को सूखे चारे में मिलाकर खिलाया जाता है। गूलर

Scanned with OKEN Scanner



गूलर की पत्ती

की लकड़ी से छोटे-छोटे फर्नीचर बनाये जाते हैं। इसकी लकड़ी ईंधन के रूप में जलाने के काम में आती है, और जलाने के बाद इससे अच्छे किस्म के कोयले बनते हैं, जो भट्टो पर ईंट पकाने के काम में लिए जाते हैं। इस पेड़ से दूध जैसा तरल निकलता है, जो बतासों में भरकर खाया जाता है, जिससे बल व बुद्धि का विकास होता है। इसके दूध को लगाने से पैरों में बिवाई फटने की बीमारी ठीक हो जाती है। गूलर का फल खानें में स्वादिष्ट होता है। जिसको बच्चे बहुत चाव से खाते है। गूलर की सूखी हुई लकड़ी धार्मिक कर्मकाण्डो जैसे हवन, पूजन आदि के काम में ली जाती है।

गूलर का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। इसका पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

कौन से कीट इसके पत्तों पर मिलते हैं? .....

इसके पके फल के अन्दर कौन से कीट मिलते हैं? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

जामुन

इस पेड़ की ऊँचाई 10 से 15 मीटर होती है। इसका छत्र बहुत बडा व छायादार होता है। जामुन के पेड़ का मुख्य तना 2-3 मीटर ऊँचा होता है। टहनियों पर गहरे हरे रंग की चिकनी सतह की पत्तियाँ होती हैं। नई पत्तियाँ हल्की बादामी व पीले रंग की होती हैं। पत्तियाँ थोड़ी चौड़ाई लिए हुए पतले व भाले के आकार का अग्रभाग लिए होती हैं। हाथ से मसल कर सूंघने पर पत्तियों से खुशबू आती है। इस पेड़ की जड़ें जमीन में बहुत गहरी जाती हैं। यह पेड़ तेज हवा व तूफान को आसानी से सह सकता है। यह पेड़ सदाबहार होता है, परन्तु पत्ते पीले पड़ कर झड़ते रहते हैं, इसके पत्ते एक साथ नहीं गिरते इस पेड़ पर मार्च माह में हरिताभ सफेद रंग के छोटे-छोटे फूल गुच्छो में आते हैं। फल छोटे-छोटे आकार के लगभग गोल व बेलनाकार हरे रंग के तथा पकने पर गुलाबी होकर गहरे काले चमकीले रंग के हो जाते हैं। कच्चे फल कषैले तथा पकने पर मीठे हो जाते हैं, इनमे सफेद रंग का गूदा निकलता है। फल के बीच में एक मोटी गुठली होती है।



जामुन की पत्तियाँ

इसका फल खाने में स्वादिष्ट मीठा होता है। इस पेड़ की पत्तियों व गुठली से मधुमेह रोग की दवाई बनाई जाती है। पके फलों से सिरका तैयार किया जाता है, जो

Scanned with OKEN Scanner



जामुन की पत्ती

कि यकृत (लीवर) की क्रियाशीलता बढाने में उपयोगी होता है। जामुन की पत्तियों को अकाल के समय पशुओं और जानवरों को सूखे चारे में मिलाकर खिलाया जाता है। इसकी सूखी हुई टहनियों को ईंधन के रूप में जलाने के काम में लिया जाता है। इसके पेड़ से अच्छी गुणवत्ता वाली लकड़ी मिलती है जिससे चकला, बेलन, फर्नीचर, दरवाजे, खिड़की, दरवाजों की चौखटें, बक्शे, चारपाई के पाये आदि बनाये जाते हैं।

जामुन का पेड़ साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जा सकता है। इसकी गुठली को जमीन में बोने से भी नया पौधा तैयार हो जाता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसके फलों को कौन-कौन से पक्षी खाते हैं? .....

.....

जंगल जलेबी

यह सदाबहार वृक्ष होता है। यह स्थानिय वृक्ष नहीं है, अपितु यह अफ्रीकी मूल का वृक्ष है। यह लगभग 15 मीटर ऊँचाई तक बढ़ने वाला वृक्ष है। इसकी जड़ें काफी गहराई तक बढ़ती हैं। इसका छत्र घना व फैला हुआ होता है। इसकी पत्तियाँ छोटे पशुओ के खुर के समान फटी हुई होती हैं। जिनका रंग गहरा हरा होता है। पत्ती के आधार पर एक जोड़ा सीधे तने हुए, पैने तथा मजबूत काटे होते है। जिनका रंग कत्थई होता है। इसकी छाल धूसर होती है। जिस पर आड़े-तिरछे निशान होते हैं। छाल चिकनी होती है। इसके फूल छोटे पीताभ सफेद होते हैं इसकी फलियाँ स्प्रिंग के समान मुड़ी हुई होती हैं, जिनके अन्दर गोल व चमकदार कत्थई रंग के बीज मीठे गूदे में लिपटे होते हैं। गूदा खाने में स्वादिष्ट होता है। यह वृक्ष पांच साल की आयु में फल देने लगता है।



जंगल जलेबी की पत्तियाँ

इसकी लकड़ी ईंधन व फर्नीचर आदि बनाने के लिए उपयुक्त है। पत्तियाँ पशुओ के लिए चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं। बीज भी पशु बडे चाव से खाते हैं। फली का मीठा गूदा बड़े चाव से खाया जाता है। बीजों की सब्जी बनाकर भी खाते हैं। छाल चमड़ा रंगने के काम आती है।

Scanned with OKEN Scanner



जंगल जलेबी की पत्ती

इसके लिए सभी प्रकार की जमीन उपयुक्त है। कंकरीली, बलुई, पथरीली व पहाड़ी ढ़लान व क्षारयुक्त मिट्टी में आसानी से उग आता है। नया पौधा बीजों से तैयार होता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

.....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग पता करके लिखें? .....

.....

जंगली खजूर

यह राजस्थान व देश के अन्य भागो में नम स्थानों, नालों के किनारों पर पाया जाता है। इसका तना सूखे पर्णवृत्तो से ढ़का रहता है। यह 25 से 30 मीटर तक लम्बा हो जाता है। इसकी जड़ें झकड़ा होती हैं, जो जमीन के ऊपर भी घनी गुच्छों में निकली होती हैं। इसके वृक्ष में शाखाऐं नहीं होती। इसके ऊपरी सिरे पर 1 से 2 मीटर तक लम्बी संयुक्त पत्तियाँ गुच्छों में होती हैं। पत्ती कई पत्रको से मिल कर बनती हैं पत्रको के अन्तिम सिरे कठोर होकर काटे का रूप ले लेती है। यह बहुपयोगी वृक्ष हैं। इसमे नर व मादा फूल अलग-अलग गुच्छों में लगते हैं। नर फूल सफेद रंग के तथा मादा फूल हल्के हरे रंग के होते हैं। फल भी गुच्छों में लगते हैं तथा नारंगी पीले रंग के होते हैं। फल पकने पर कत्थई रंग के हो जाते हैं। फल के मध्य में एक कठोर गुठली होती है। गुठली मीठे गूदे से लिपटी रहती है जिस पर एक लम्बवत् गहरी धारी होती है।



खजूर की पत्तियाँ

इसकी पत्तियाँ अकाल के समय व चारे की कमी के दिनों में काटकर पशुओं को खिलाते हैं। पत्तियों का उपयोग झाड़ू, हाथ के पंखे, छप्पर, चटाई, टोकरी व रस्सी बनाने में किया जाता है। इसकी पत्तियों पर बयां नामक चिड़िया सुन्दर घोंसले बनाकर भी रहती है। इसकी चोटी पर बुगले व अन्य शिकारी पक्षी बैठकर शिकार की तलाश में रहते हैं। इसके तने पर पत्तियों के नीचे आडे कट लगा कर इसका रस

Scanned with OKEN Scanner

एकत्र किया जाता है। इसे नीरा कहते हैं। इस रस को आग पर पकाने से गुड़ भी बनाया जाता है। इसके पके फल खाने पर मीठे लगते हैं। इसका रस, फल व गुड़ बहुत पोष्टिक होते हैं।


खजूर की पत्तियाँ

खजूर का पेड़ सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो सकता है, परन्तु नालों के किनारे, पहाड़ी ढ़लानों पर, घाटियों में झुण्ड में पैदा होता है। यह लगभग 25 वर्ष बाद फल देना प्रारम्भ करता है। नया पौधा गुठली से तैयार किया जाता है।

कौन से पक्षी इसके पेड़ पर बैठते हैं? .....

अध्ययन करें खजूर का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल को देखें इसका बीज कैसा होता हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

इसके ऊपर कौन से पक्षी घौंसला बनाकर रहते हैं? .....

इसकी पत्ती के अन्तिम सिरे पर बने कांटों को देखें, उनका रंग कैसा है ? .....

.....

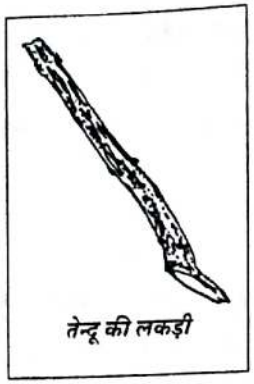
तेन्दू

तेन्दू के पेड़ की ऊँचाई 3 से 6 मीटर तक होती है। आमतौर पर यह झुण्ड में पाया जाता है। यह मध्यम ऊँचाई का शुष्क वन क्षेत्रों व अरावली पर्वतमाला में पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी शाखाऐं मजबूत होती हैं।। इसकी छाल का रंग सफेदी लिए काला होता है, तथा यह कटी फटी धारियों युक्त होती है। इसकी पत्तियाँ चौड़ी व कुछ खुरदरी तथा मोटी, गहरे हरे रंग की होती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है। परन्तु इसके पुराने पत्ते पीले पड़ कर झड़ते भी रहते हैं। फूल अप्रेल से मई माह तक छोटे - छोटे गुच्छों में आते हैं। फूल हल्के पीले रंग के होते हैं। इसका फल गोल, मोटा तथा चीकू के आकार का होता है। कच्चा फल गहरे हरे रंग का तथा पकने पर कत्थई मटमैला हो जाता है। इसमें कई बीज निकलते हैं। पके हुए फल का गूदा मीठा होता है।


तेन्दू की पत्तियाँ

तेन्दू की पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है। इस कार्य से काफी लोगों को रोजगार भी मिलता है। इसकी लकड़ी कठोर होती है। जिससे कृषि उपकरणों के हत्थे बनाते हैं। इसके तने से छप्पर बनाने के लिए बलीण्डा (मध्य की लकड़ी) बनाया जाता है। पत्तियाँ बकरियों को चराने के काम आती हैं। सूखी

Scanned with OKEN Scanner



तेन्दू की लकड़ी

लकड़ियाँ ईंधन के काम आती हैं। इसके फल खाने के काम में लिए जाते हैं जो की मीठे होते हैं।

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। पत्थर की कठोर चट्टानों, कंकरीली, चिकनी, दोमट आदि मिट्टी में भी आसानी से उग आता है। पहाड़ो की ढलान पर भी काफी मात्रा में प्राकृतिक रूप से पैदा होता है। बीजों से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

अध्ययन करें तेन्दू का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसकी पत्ती का क्या उपयोग होता है? .....

इसकी छाल का रंग कैसा होता है? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

अरडू



इमली





कदम्ब



करंज

Scanned with OKEN Scanner

काला खैर



कचनार





कूमट

कुटज



गूंदी





गूलर

Scanned with OKEN Scanner

जामुन



जंगल जलेबी



पापड़



नीम





जंगली खजूर



तेंदू



पीपल

Scanned with OKEN Scanner

पीलू



बेर



लैसवा



बरगद





बेल



बकायन



सहँजना



सेमल

Scanned with OKEN Scanner

सिरस



सीताफल





शीशम



हिंगोट

नीम

नीम गहरी जड़ वाला मध्यम ऊँचाई का 10 से 18 मीटर ऊँचा पेड़ होता है। इसकी शाखाओं का छत्र अण्डाकार होता है। इसकी जड़ें गहरी व अगल-बगल में काफी दूरी तक फैली होती है। इसकी छाल मोटी बाहर से देखने पर बादामी भूरी तथा अन्दर से सफेद पीले रंग की होती है। इसकी छाल में अनेक धारियाँ होती हैं। छाल कटी-फटी दिखाई देती हैं। पत्तियाँ संयुक्त तथा किनारे पर आरी के समान कटी हुई व चखने पर स्वाद में कड़वी होती हैं। नई मुलायम पत्तियाँ ताँबे के रंग की होती हैं। नई पत्तियों के साथ पुष्प भी संयुक्त रूप से सींको पर आते हैं तथा बाद में निम्बोली (फल) के रूप में बदलते हैं। कच्ची निम्बोली काटने पर इसमें सफेद दूध जैसा कडवा तरल निकलता है। निम्बोली पकने पर पीली व मीठी हो जाती है। फल वर्षा के दिनों में पकते हैं। पक कर नीचे गिरी हुई निम्बोलियों पर बहुत मक्खियाँ आती हैं। निम्बोलियों को जानवर तथा पक्षी खाते हैं तथा गुठलियाँ उनकी विष्ठा में निकलती हैं, जिससे नये पौधे पनपते हैं।



नीम की पत्ती

नीम का पेड़ बहुउपयोगी वृक्ष है। यह औषधीय गुणों का भण्डार माना

Scanned with OKEN Scanner

जाता है । इसकी जड़, छाल, पत्ती, निम्बोली व बीज सभी का औषधीय महत्व है । इसका तेल लगाने से सर की जूँए मर जाती हैं । घाव में पड़ने वाले कीड़े मर जाते हैं । इसका प्रत्येक भाग बहुत उपयोगी होता है, जिनसे बहुत सी दवाइयाँ बनाई जाती हैं। इसकी पत्तियों का धुआँ कीटनाशक होता है । मच्छर भगाने के लिए इसकी पत्तियों का धुआँ करते है । इसकी पतली शाखा दातून के रूप में उपयोग करते हैं । अनाज भण्डारण में कीड़ों से रक्षा करने के लिए पत्तियों का उपयोग करते हैं । पत्ते चारे के रूप में बकरी व ऊँट को खिलाने में उपयोग करते हैं । इसकी खली खाद व कीटनाशक के रूप में उपयोग करते है। नीम की लकड़ी से फर्नीचर व दरवाजे आदि बनाये जाते हैं। नीम की लकड़ी का उपयोग ईंधन के रूप में भी किया जाता है।

नीम का पेड़ सभी प्रकार की मिट्टी में उग सकता है । परन्तु पानी भरने वाली भूमि व क्षारीय मिट्टी में नहीं पनपता यह पथरीली व कंकरीली मिट्टी में भी पैदा हो जाता है। नीम का पेड़ पहाड़ी ढ़लानों पर बहुत कम पाया जाता है । नया पौधा पकी हुई ताजा निम्बोली बोने पर ही तैयार किया जा सकता है। यह पुरानी निम्बोली से नहीं उगाया जा सकता।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसकी भीतरी छाल का रंग कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

पीपल

पीपल का पेड़ प्रायः सभी स्थानो पर पाया जाता है । इसका पेड़ 30 से 40 मीटर तक लम्बा हो जाता है। इसका तना काफी मोटा करीब 3 से 4 मीटर तक घेरे का होता है । इसकी छाल धूसर रंग की होती है। तथा काटने पर लाल दिखाई देती है। इसका छत्र काफी फैला हुआ होता है । पीपल की शाखाओं को काटने पर लाल रंग का तरल निकलता है। पीपल के वृक्ष पर चींटे बहुत मिलते हैं। पत्तियाँ लम्बे डण्ठल के द्वारा शाखा से जुड़ी होती हैं । पत्तियाँ गहरे हरे रंग की पीछे से चौड़ी तथा आगे से नुकीली होती हैं । फल शाखाओं से जुड़े हुए गुच्छों में लगते हैं जो पकने पर नारंगी पीले रंग के हो जाते हैं।



पीपल की पत्तियाँ

इसकी पत्तियाँ चारे में इस्तेमाल होती हैं। इसकी छाया घनी होती है । इसकी मुलायम पत्तियाँ मक्खन लगाकर बांधने से फोडे फुन्सी ठीक हो जाते है । फल पक्षियों व जानवरो के खाने के काम आते हैं । इसकी लकड़ी को बहुत पवित्र माना जाता है । हिन्दू धर्म में पीपल की लकड़ी यज्ञ व हवन में इस्तेमाल होती है । इसके पेड़ को काटना पाप समझा जाता है ।

पीपल का पेड़ किसी भी प्रकार की मिट्टी में उगने की क्षमता रखता है। पक्षियों

Scanned with OKEN Scanner

द्वारा फल खाने के बाद उनकी बींट (विष्ठा) से नया पौधा कई स्थानों पर अपने आप उग आता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

.....

कौन से कीट इसके वृक्ष के तने पर मिलते हैं? .....

.....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

.....

इसके ऊपर कौन से पक्षी घौंसला बनाकर रहते हैं? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

पापड़

इस पेड़ की ऊँचाई 10 से 20 मीटर तक होती है। इसका छत्र बहुत बडा छायादार होता है । पापड़ के पेड़ का तना 3 से 4 मीटर ऊँचा होता है और तने के ऊपर शाखायें फैली हुई होती हैं । टहनियों पर अमरूद के पत्तों जैसे थोड़े पतले व बड़े आकार के पत्ते होते हैं यह पेड़ तेज हवा व तूफान आदि को भी सह सकता है । इसके पेड़ पर मार्च माह में छोटे-छोटे फूल गुच्छों में आते हैं । यह पेड़ सदाबहार होता है। इसके पत्ते धीरे-धीरे झड़ते हैं। पत्ते झड़ने के बाद ही फूल व फल आते हैं। इसके फल छोटे झिल्लीनुमा गोल होते हैं और झिल्ली के बीच में एक छोटा, पतला बीज निकलता है । बीज की आकृति दिल के समान होती है। जिसको खाने पर यह हल्का मीठा व स्वादिष्ट लगता है ।



पापड़ की पत्तियाँ

इस पेड़ की पत्तियाँ दवाई के रूप में उपयोग की जाती हैं। चर्म रोगों जैसे – दाद, खाज आदि में इसकी पत्तियों को तम्बाकू की पत्तियों के साथ पीसकर लगाने से चर्म रोग समाप्त हो जाते हैं । पापड़ की पत्तियों को अकाल के समय पशुओ को सूखे चारे में मिलाकर खिलाते हैं । इसकी सूखी हुई टहनियों को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करते है। इस वृक्ष की लकड़ी वजन में हल्की होती

Scanned with OKEN Scanner



पापड़ की पत्ती

है। इससे दही बिलौने की रई, चकला, बेलन, क्रिकेट के बैट आदि सामान बनाए जाते हैं। इसकी लकड़ी से अच्छी किस्म का फर्नीचर, दरवाजें, खिड़की, जालदान की चौखट, चारपाई, प्लाइबोर्ड आदि बनाये जाते हैं।

पापड़ का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जा सकता है। बीज हवा द्वारा इधर -उधर फैलने से भी नये पौधे उग आते हैं।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

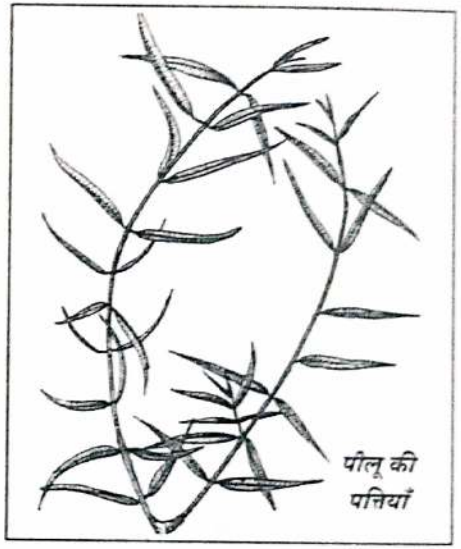
इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

बीजों का स्वाद कैसा है? .....

.....

पीलू

पीलू का वृक्ष अरावली पर्वतमाला में लगभग सभी स्थानों पर पाया जाता है। इसका वृक्ष कम ऊँचाई का लगभग 3 से 5 मीटर तक ऊँचाई होता है, तथा आमतौर पर झुण्ड में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ चिकनी, मोटी तथा गहरी हरी व लम्बी होती हैं। मसल कर सूंघने पर खुशबू देती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है। परन्तु इसके पत्ते पीले पड़ कर झड़ते भी रहते हैं। नई पत्तियाँ अप्रैल माह में आती हैं, जो कि हरिताभ लिए हल्के पीले रंग की होती हैं। इसकी छाल धूसर सफेद व खुरदरी होती है। इसके फूल हरिताभ सफेद रंग के छोटे -छोटे होते हैं। इसका फल गोल छोटा पीला हो जाता है। इसमें मीठा गूदा होता है। जिसे पक्षी खाकर बीजों को फैलाते हैं। जिससे नये पौधे उगते हैं।



पीलू की पत्तियाँ

इसकी लकड़ी ईंधन के रूप में कम उपयोग होती है। कृषि के औजार व उनके हत्थे बनाने में उपयोग की जाती है। इसके फल खाने के काम आते हैं। इसके फल व पत्ते खिलाने से दुधारू पशुओं का दूध बढ़ जाता है। इसके बीजों की खली पशुओं को खिलाने व खाद के रूप में उपयोग करते हैं। इसका फल गठियाबाय, तिल्ली बढ़ने आदि रोगों में दवाई के रूप में प्रयोग करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। इसका वृक्ष रेत के टीलों, पथरीली भूमि तथा मटियार दोमट मिट्टी में पैदा होता है। यह पहाड़ियों की ढलान पर नहीं होता। पक्षियों की बींट में आये बीजों से नये पौधे पनपते हैं। बीजों से नये पौधे तैयार करके रोपने से नया पेड़ तैयार किया जा सकता है।



पीलू की पत्ती

कौन से पक्षी इसके पेड़ पर बैठते हैं? .....

.....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पीलू के फल कौन-कौन से पक्षी खाते हैं? .....

पीलू की पत्तियों के अन्य उपयोग लिखिए? .....

.....

पीलू का पेड़ किन स्थानों पर मिलता है? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

बेल

यह छोटा तथा मध्यम ऊँचाई का शुष्क वन क्षेत्रों में अरावली पर्वतमाला में लगभग सभी स्थानो पर पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 3 से 4 मीटर तक होती है। इसकी शाखाओं पर मजबूत काँटे होते हैं। इसकी पत्तियाँ 3 उपपत्रों से मिल कर बनती हैं तथा डन्ठल के द्वारा शाखाओं से जुड़ी हुई होती है। पत्र पीछे से गोलाई लिए हुए चौडे तथा अगले सिरे पर नुकीले होते हैं। पत्तियाँ चिकनी व पतली, हलके हरे रंग की होती हैं। पत्तियाँ सुगन्धित होती हैं तथा कांटो के पास से निकलती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है। परन्तु पके पत्ते झड़ते भी रहते हैं। इसकी छाल खुरदरी भूरे धूसर रंग की होती है। फूल मार्च से मई के मध्य लगते हैं, जो कि आकार में छोटे तथा हरापन लिए सफेद रंग के होते हैं। इसका फल गोल, मोटा, कठोर होता है। कच्चा फल गहरे हरे रंग का तथा पकने पर पीला मटमैला हो जाता है। इसमें सुगन्धित पीला गूदा निकलता है, जिसमें अनेक बीज भरे होते हैं जो कि लेसदार फीके चिपचिपे पदार्थ के अन्दर रहते हैं। इसके फल का गूदा मीठा होता है।



बेल की पत्तियाँ

Scanned with OKEN Scanner

इसकी शाखाओं से खेतों की बाड़ बनाई जाती है । इसके फलों से निकले गूदे को खाया जाता है। गर्मी के दिनो में बेल के पके फल के गूदे से शर्बत बनाकर इस्तेमाल करने से लू नहीं लगती । इसके सूखे गूदे से दवाई बनाई जाती है ।



बेल की पत्ती

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। यह पत्थर की कठोर चट्टानों व मटियार दोमट मिट्टी में भी पैदा हो सकता है । बीजों से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं।

अध्ययन करें, बेल का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

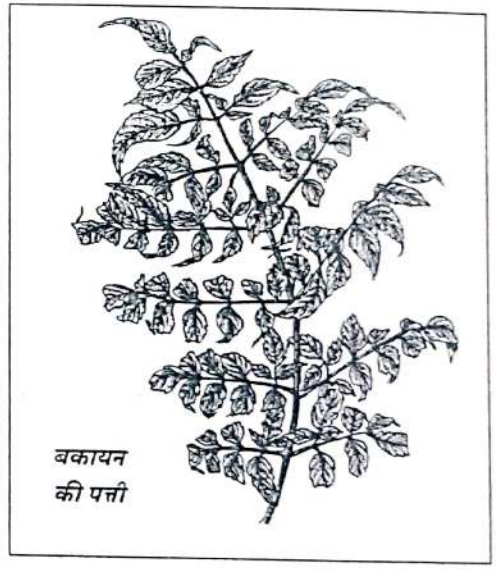
नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसकी पत्तियों के उपयोग लिखें? .....

.....

बकायन

बकायन के वृक्ष का मुख्य तना 1 से 2 मीटर ऊँचा होता है । इसका वृक्ष 5 से 10 मीटर ऊँचाई तक लम्बा हो जाता है। छाल चिकनी, धारियों युक्त कत्थई रंग की होती है। इसका छत्र बड़ा और सघन होता है। यह वृक्ष पतझड़ी होता है। टहनियों पर संयुक्त पत्तियाँ होती है पत्र पतले गोलाकार तथा आगे से नुकीले लगभग 1 ईंच लम्बे होते हैं तथा किनारो पर आरी के दाँतों के समान कटे हुए होते हैं। पत्तियाँ कई पत्रों के जोड़ों से मिलकर बनती हैं । इस वृक्ष की जड़ गहरी व फैली हुई होती हैं। फूल नीले व बैंगनी रंग के छोटे-छोटे गुच्छो में नवम्बर से दिसम्बर माह में आते हैं। फल बसन्त ऋतु में आते हैं, जो कि गोल, छोटे तथा गहरे हरे रंग के होते हैं तथा गुच्छों में लगते हैं। फलों पर हल्के सफेद धब्बें होते हैं । फल पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं।



बकायन की पत्ती

Scanned with OKEN Scanner

इसकी पत्तियाँ बकरियों को चारे के रूप में खिलाई जाती हैं। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है जो कि दवाई बनाने के काम आता है। इसकी लकड़ी कमजोर होती है। इसकी सूखी हुई टहनियों को ईंधन के रूप में जलाने के काम में लेते हैं।


बकायन का संयुक्त पत्रक

बकायन का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, परन्तु बलुई दोमट भूमि में यह अधिक तेजी से पनपता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

.....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

बेर

बेर का पेड़ सदा हरा भरा रहता है। यह झुण्ड में पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी जड़ें गहरी व अगल-बगल में फैली हुई होती हैं। वृक्ष की ऊँचाई 12 मीटर तक हो जाती है। इसकी छाल धूसर व काली होती है। छाल लम्बी -लम्बी धारियों में कटी फटी होती है। बेर की शाखाओं पर पत्तियों के पर्णाधार पर दो शूल होते हैं। जिनमें एक मुड़ा हुआ तथा एक सीधा होता है। पत्ती अण्डाकार होती है। पत्ती की ऊपरी सतह चिकनी व हरे रंग की होती है तथा नीचे का तल खुरदरा व रोम युक्त, श्वेत रंग का होता है। पत्तियाँ किनारे पर आरी के दाँतों के समान हल्की कटी हुई होती हैं। फूल हरिताभ सफेद होते हैं, जो कि पत्तियों के अक्ष से गुच्छों में निकलते हैं। फल लम्बे अण्डाकार व गोल होते हैं। फल प्रारम्भ में हरे रंग के होते हैं, जो बाद में पकने पर गहरे पीले व कत्थई रंग के हो जाते हैं। फल के बाहरी छिलके के अन्दर मीठा खुशबूदार गूदा भरा होता है। गूदे के अन्दर कठोर गुठली होती है।


बेर की पत्तियाँ

Scanned with OKEN Scanner

बेर की पत्तियाँ चारे के काम आती हैं। इसके फल खाने में स्वादिष्ट व पोष्टिक होते हैं। इसकी लकड़ियाँ कोयला बनाने व ईंधन तथा कृषि उपकरण बनाने के काम आती है। इसकी टहनियाँ खेतों की बाड़ बनाने के काम आती हैं। शुष्क क्षेत्रों में इसकी खेती करके काफी आमदनी हो सकती है।

बेर के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। वैसे यह सभी प्रकार की मिट्टी में आसानी से पनप जाता है। यह क्षारीय व लवणीय मिट्टी में भी पैदा हो सकता है। नया पौधा गुठली से पैदा होता है। इसके उन्नत नस्ल के वृक्ष नर्सरी में कलम चढ़ा कर तैयार किये जाते हैं। इसके वृक्ष को पानी की कमी वाले क्षेत्रों में भी आसानी से उगाया जा सकता है।

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

अध्ययन करें बेर का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसके फल का स्वाद कैसा होता है? .....

बरगद

बरगद का वृक्ष देश के लगभग सभी भागों में मिलता है। इसका पेड़ काफी बड़ा होता है। इसकी पत्तियाँ चौड़ी व अण्डाकार तथा सफेदी लिए हरे रंग की होती हैं। इसके तने से जटा मूल निकल कर जमीन के अन्दर जाकर जड़ का रूप ले लेती हैं। जिससे यह वृक्ष आस-पास फैलता जाता है और विशाल वृक्ष का रूप ले लेता है। इसकी छाल मोटी व धूसर रंग की होती है। नई पत्तियाँ बादामी सुर्ख रंग की होती हैं। फल छोटी गोलियों की तरह शाखाओं पर मजबूती से चिपके रहते है। फल प्रारम्भ में हल्के हरे तथा पकने पर नांरगी-पीले रंग के हो जाते हैं। पक्षी इन्हें बड़े चाव से खाते हैं। फल के अन्दर बारीक-बारीक अनेकों बीज होते हैं। बरगद की छाया बहुत घनी होती है। पत्ती तोडने पर सफेद दूध जैसा तरल निकलता है। इसकी आयु सैंकड़ो वर्ष होती है।


बरगद की पत्तियाँ

बरगद की पत्तियाँ चारे के रूप में बकरियों व भेडों को खिलाई जाती हैं। इसके फल पक्षी खाते है तथा बीजो का प्रकीर्णन (फैलाने का काम) करते हैं। इसकी शाखाओं से निकली मुलायम जड़ें औषधि बनाने के काम आती हैं। बरगद के वृक्ष का दूध भी औषधि के रूप में उपयोग होता है। पत्तों से पत्तले एवं दोने भी बनाये जाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

यह हर प्रकार की मिट्टी में उग सकता है। इसका वृक्ष दूसरे वृक्षों के ऊपर भी उग आता है। तथा धीरे-धीरे उस वृक्ष को समाप्त कर देता है। बरगद के वृक्ष के नीचे अन्य पेड़ नहीं पनपते। पक्षियों द्वारा फल खाने के बाद उनकी बींट से नया पौधा कई स्थानों पर अपने-आप उग आता है। इसके बीज से नया पौधा तैयार किया जाता है। इसकी शाखा को काटकर लगाने से भी नया पौधा तैयार किया जा सकता है।

कौन से पक्षी इसके पेड़ पर बैठते हैं? .....

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

अध्ययन करें बरगद का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

कौन से कीट इसके वृक्ष के तने पर मिलते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

कौन से जानवर इसकी छाया में बैठते हैं ? .....

लैसवा

इसकी ऊँचाई 5 से 8 मीटर तक होती है। यह मध्यम ऊँचाई का वृक्ष है। इसकी शाखाऐं बहुत मजबूत होती हैं। इसकी छाल चिकनी तथा कत्थई भूरे रंग की होती है। इसकी पत्तियाँ चौड़ी होती हैं। पत्तियों की निचली सतह कुछ खुरदरी व ऊपरी सतह चिकनी होती है। पत्तियाँ थोड़ी मोटी व गहरे हरे रंग की होती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है। परन्तु इसके पुराने पत्ते पीले कत्थई होकर झड़ते भी रहते है। छोटे - छोटे सफेद रंग के फूल अप्रेल से मई के मध्य गुच्छों में आते हैं। इसका फल 2 से 4 ईंच तक मोटे आकार का गोल होता है। कच्चा फल गहरे हरे रंग का तथा पकने पर पीला हो जाता है। पके हुए फल का गूदा लिसलिसा व चिपकने वाला, हल्की मिठास लिए लगभग फीका होता है। इसमे एक गुठली होती है जिसमें कई बीज निकलते है।



लैसुवा की पत्तियाँ

इसकी लकड़ी मजबूत एवं लचीली होती हैं। जिससे कृषि उपकरणों के हत्थे बनाये जाते हैं। इसकी पत्तियाँ बकरियों को चराने के काम आती हैं। सूखी लकड़ियाँ ईंधन के काम ली जाती हैं। इसके फल अचार बनाकर खाने के काम में आते हैं तथा

Scanned with OKEN Scanner

दवाई बनाने में भी उपयोग होते हैं। बच्चे इसके फलों के चिपचिपे पदार्थ को किताबे, कापियाँ आदि चिपकाने के काम में भी लेते हैं।

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। कंकरीली, दोमट, चिकनी, रेतीली मिट्टी में भी आसानी से उग आता है। बीजों से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं।

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल में कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

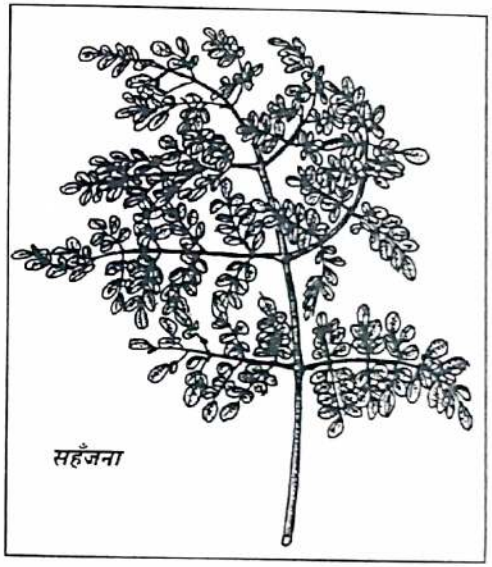
इसके अन्य उपयोग पता करके लिखिये? .....

.....

.....

सहँजना

सहँजना का वृक्ष 10 से 20 मीटर ऊँचाई तक लम्बा हो जाता है। इसका छत्र बडा ओर छितरा हुआ होता है। सहँजने के वृक्ष का मुख्य तना 2 से 3 मीटर ऊँचा होता है। शाखाओं पर संयुक्त पत्तियाँ होती हैं। इसके पत्रक पतले गोलाकार तथा आगे से नुकीले एक से डेढ ईंच लम्बे होते हैं। पत्रक किनारों पर आरी के दाँतों के समान कटे हुए होते हैं। पत्तियाँ कई पत्रकों के जोड़ों से मिलकर बनती हैं। इस पेड़ की जड़ें भूमि में बहुत गहराई तक जाती हैं। पेड़ पर दिसम्बर व जनवरी माह में पीताभ सफेद रंग के छोटे-छोटे फूल गुच्छो में आते हैं, जिनमें मिठास होती है तथा खुशबू आती है। यह वृक्ष सदाबहारी, होता है। इस पर फलियाँ मार्च से अप्रेल के मध्य आती हैं । इसकी फलियाँ हरे रंग की गोल व धारियों युक्त होती हैं। फलियाँ आधा से डेढ़ फीट तक लम्बी होती हैं। पकने पर फलियाँ हलके पीले तथा भूरे रंग की हो जाती हैं। इनमें गोल, चपटे तथा भूरे रंग के बीज निकलते हैं।



सहँजना

इसकी फलियों की सब्जी बना कर खाते हैं। फूलों व फलियों का अचार बनाया जाता है। पत्तियाँ दवाई बनाने के काम में आती हैं। इसके फूलों की चाय सर्दी जुकाम

Scanned with OKEN Scanner

को दूर करती है। इसके बीजों व पत्तियों से रतौंधी रोग (रात में दिखाई न देना) दूर होता है। सहँजने की पत्तियाँ पशुओं का अच्छा चारा होती है। इसकी लकड़ी को ईंधन के रूप में जलाने के काम में भी लेते हैं।



सहँजने का फूल

सहँजने का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, परन्तु बलुई दोमट मिट्टी में अधिक तेजी से पनपता है। आजकल औषधीय उपयोग के लिए इसकी खेती भी की जाने लगी है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

कौन से पशु इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

इसके फूलों पर कौन से कीट आते हैं? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

इसके गोंद के उपयोग लिखिये? .....

इसकी हरी फलियों का उपयोग लिखिये? .....

सेमल

सेमल का पेड़ 10 से 15 मीटर तक ऊँचा हो जाता है। इसके तने व शाखाओं पर काँटेदार मोटी छाल होती है। छाल का रंग हल्का हरा होता है। इसकी शाखाऐं आमने-सामने समान दूरी से निकल कर ऊपर की तरफ बढती हैं। इसका तना 1 से 3 मी0 तक मोटा हो जाता है। तीन से सात तक छोटे पत्रक मिलकर हाथ के पंजे के आकार की संयुक्त पत्ती बनाते हैं। इसके फूल गहरे लाल रंग के होते हैं, जो कि मार्च माह में पूर्ण पतझड़ के बाद आते हैं। उस समय पूरा वृक्ष फूलों से लद जाता है तथा मई माह तक फल आकर पकने लगते हैं। इसके फल में रुई भरी रहती है जिसमें छोटे-छोटे काले धूसर रंग के बीज होते हैं, जो कि रेशों से मजबूती से जुड़े रहते हैं।



सेमल की पत्तियाँ

इस वृक्ष की लकड़ी का उपयोग दियासलाई व प्लाईबोर्ड बनाने तथा पैकिंग के लिए डिब्बे बनाने में होता है। पके हुए फल फटने से इसमे से रुई निकलती है, जो कि गद्दों में व तकियों में डालने के काम आती है। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है। यह तेल सौन्दर्य प्रसाधन बनाने के काम आता है। इसकी शाखा का डंडा साधु व फकीर अपने साथ रखना शुभ मानते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

सेमल का पेड़ किसी भी किस्म की मिट्टी में पैदा हो सकता है। इसका पेड़ अरावली के जंगलो में भी प्राकृतिक रूप से उगा हुआ पाया जाता है। उपयुक्त जल निकास वाली नम बलुई दोमट भूमि इसके लिए उपयुक्त होती है। नया पौधा बीज से उगाकर तैयार किया जाता है।

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

पेड़ की छाल का रंग कैसा है ? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

बीजों का रंग कैसा है? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

.....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसके फल से निकलने वाली रुई किस उपयोग में आती है? .....

.....

इसकी पत्तियाँ कौन से जानवर खाते हैं? .....

.....

सिरस

इसका पेड़ 10 से 20 मीटर ऊँचाई का होता है। इसका छत्र बड़ा और छायादार होता है। यह पेड़ हमेशा हरा-भरा रहता है। सिरस के पेड़ का मुख्य तना 2-3 मीटर ऊँचा हो जाता है। शाखाओं पर संयुक्त पत्तियाँ होती हैं। पत्र पतले व आगे से गोलाकार होते हैं। पत्तियाँ पीली पड़ कर गिरती रहती हैं। इस पेड़ की जड़ें भूमि में बहुत गहराई तक जाती हैं। इसके पेड़ पर अप्रेल व मई माह में पीताभ सफेद छोटे -छोटे फूल गुच्छों में आते हैं, जिनमें खुशबू आती है और फलियाँ जून व जुलाई माह में आती हैं। इसकी फलियाँ चपटी व एक फिट तक लम्बी होती हैं इनमे 5 से 6 बीज होते हैं जो कि शरद ऋतु में पकती हैं तथा हलके पीले मटमैले रंग की हो जाती हैं। फलियाँ पेड़ पर काफी समय तक लटकी रहती हैं।



सिरस की पत्तियाँ

इस पेड़ की पत्तियाँ दवाई बनाने के काम में आती हैं। दाद, खाज आदि चर्म रोगों में इसकी पत्तियों को पानी में पीसकर लगाने से चर्म रोग समाप्त हो जाता है। सिरस की पत्तियों को चारे के आभाव के दिनों में तथा अकाल के समय पशुओं को खिलाया जाता है। इसकी

Scanned with OKEN Scanner

सूखी हुई टहनियाँ ईंधन के रूप में जलाने के काम आती हैं। इसकी लकड़ी कमजोर होती है, अतः फर्नीचर आदि बनाने के लिए उपयुक्त नहीं होती।


सिरस की फली

सिरस का वृक्ष साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, परन्तु बलुई दोमट भूमि में अधिक तेजी से पनपता है। नया पौधा बीज से तैयार किया जाता है।

कौन से पक्षी इसके पेड़ पर बैठते हैं? .....

सिरस का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

कौन से जानवर इसकी पत्तियों को खाते हैं? .....

कौन से कीट इसके वृक्ष के तने पर मिलते हैं? .....

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसकी फलियों का निरीक्षण कीजिए, इसमें कितने बीज होते हैं? .....

बीजों का उपयोग पता करके लिखिये? .....

.....

सीताफल

आमतौर पर यह सजातिय वृक्षों के झुण्ड में पाया जाने वाला वृक्ष है। इसका छत्र बहुत सघन होता है। इसकी ऊँचाई 4 से 8 मीटर तक होती है। यह मध्यम ऊँचाई का शुष्क वन क्षेत्रों व अरावली पर्वतमाला में पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी शाखाऐं मजबूत होती हैं। इसकी छाल चिकनी व धूसर कत्थई रंग की होती है। इसकी पत्तियाँ पीछे से चौड़ी तथा इनका अगला सिरा नुकीला होता है। पत्तियाँ चिकनी व मोटी गहरे हरे रंग की होती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है। परन्तु इसके पुराने पत्ते पीले- कत्थई पड़कर झड़ते भी रहते हैं। फूल जून से जुलाई माह के मध्य आते हैं, जो कि हल्के पीले सफेद रंग के होते हैं। फल वर्षा ऋतु में आते हैं। फल अक्टूबर से नवम्बर तक पक जाते हैं। फल गोल तथा छोटे-छोटे उभार लिए मोटा व गोल होता है। फल कच्ची अवस्था में हरा तथा पकने पर हरीताभ लिए पीला हो जाता है। इसमे कई बीज निकलते हैं, पकने पर इसका गूदा बहुत मीठा हो जाता है।


सीताफल की पत्तियाँ

Scanned with OKEN Scanner

इसके फल खाने के काम में लिए जाते हैं, जो बहुत मीठे, पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होते हैं। जिसे लोग बड़े चाव से खाते हैं। इसकी सूखी लकड़ियाँ ईंधन के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं। इसकी लकड़ी से कृषि उपकरणों के हत्थे बनाते हैं। पत्तियाँ बकरियों को चराने के काम आती हैं। इसके बीजों व पत्तियों में कीटनाशक तत्व होता है। बीजों को पीसकर सिर में लगाने से सिर की जुऐं मर जाती हैं। बीज व पत्तियों से कीटनाशक तैयार किया जाता है, जो कि फसलों को कीटों से मुक्त करने के काम आता है।

सीताफल का वृक्ष पत्थर की कठोर चट्टानों, कंकरीली, रेतीली तथा दोमट मिट्टी में आसानी से उग आता है। यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। पहाड़ों की ढ़लानों पर भी काफी मात्रा में प्राकृतिक रूप से पैदा होता है। बीजों से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं। इसकी उपयोगिता के कारण आजकल इसकी खेती भी की जाने लगी है। इसकी खेती करने के लिए इसे प्रयाप्त सिंचाई की आवश्यकता होती है तभी यह अच्छी पैदावार देता है।

अध्ययन करें सीताफल का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसके फल को देखें इसमें कितने बीज हैं ? .....

कौन से पक्षी इसके फल को खाते हैं? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

इसके अन्य उपयोग पता करके लिखिये? .....

.....

शीशम

शीशम का वृक्ष आकार में बड़ा व पतझड़ी वृक्ष होता है। इसकी जड़ें गहरी व अगल-बगल में फैलने वाली होती हैं। पेड़ बड़ा होने पर जड़ें पास की जमीन से नई कोंपलो के रूप में बाहर निकल आती हैं। जिससे आस-पास नये पौधे उग आते हैं। यह पेड़ 10 से 15 मीटर तक लम्बा हो जाता है। इसका तना काफी मोटा व टेढ़ा-मेढ़ा होता है। इसकी छाल धूसर हरे रंग की तथा छोटी-छोटी धारियों में कटी-फटी होती हैं। पत्तियाँ डंठल द्वारा शाखाओं से जुड़ी होती हैं, जो कि पीछे से थोड़ी चौड़ी व गोलाई लिए होती हैं। पत्तियों का अग्रभाग नुकीला होता है। फूल पीताभ -श्वेत रंग के होते है जो कि पत्तियों के कक्ष में गुच्छों में मार्च तथा अप्रैल माह में लगते हैं। इसकी फलियाँ चपटी, पतली, जीभ के आकार की होती हैं। कच्ची फलियाँ पीताभ हरी तथा पकने पर हल्के बादामी रंग की हो जाती है। फलियाँ पेड़ पर काफी समय तक लटकी रहती हैं तथा झड़ने पर हवा में दूर तक फैल जाती हैं। जिनसे प्राकृतिक रूप से नये पौधे पैदा होते हैं।



शीशम की पत्तियाँ

Scanned with OKEN Scanner

इस वृक्ष की गहरे बादामी रंग की लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इसकी लकड़ी फर्नीचर बनाने, दरवाजे बनाने, कृषि के औजार व उनके हत्थे बनाने के लिए अच्छी मानी जाती है। ईंधन के रूप में भी लकड़ी का उपयोग किया जाता है। इसकी पत्तियों को चारे के रूप में भेड़, बकरियों को खिलाते हैं। चारे की कमी के दिनों में व अकाल के समय में इसकी पत्तियाँ पशुओं के लिए अच्छा चारा होती हैं। इसकी पत्तियों व बीज में औषधीय गुण होते हैं।

शीशम के लिए बलुई, दोमट, कंकड वाली व ऊसर तथा अच्छे जल निकास वाली भूमि उपयुक्त होती है। ऐसी भूमि जिसमे पानी भरता हो इसके लिए उपयुक्त नहीं होती। नये पौधे बीज से तैयार किये जाते हैं। जड़ों से निकले कल्लों से भी नये पोधे उगाये जा सकते हैं।

इसकी पत्ती का स्वाद कैसा होता है? .....

इसके पत्ते कौन से मौसम में गिरते हैं? .....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

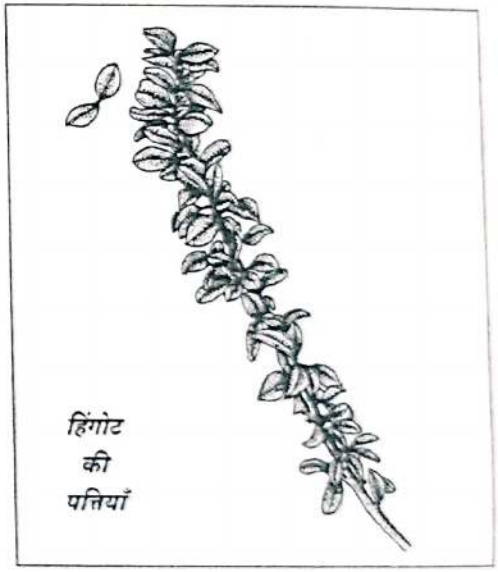
इसके बीज का रंग कैसा होता है? .....

इसकी फली में कितने बीज होते है? .....

इसकी लकड़ी के अन्य उपयोग लिखिये ? .....

हिंगोट

यह छोटा तथा मध्यम ऊँचाई का शुष्क वन क्षेत्रों तथा अरावली पर्वतमाला में लगभग सभी स्थानों पर पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 3 से 4 मीटर तक होती है। आमतौर पर यह सजातिय वृक्षों के झुण्डों में पाया जाता है। इसकी शाखाओं पर मजबूत कांटे होते हैं। इसकी पत्तियाँ 2 या 3 उपपत्रों से मिल कर शाखा से जुड़ी हुई होती हैं। पत्तियाँ चिकनी व मोटी तथा गहरे हरे रंग की होती है। पत्तियाँ कांटो के पास से निकलती हैं। यह सदा हरा रहने वाला वृक्ष है, परन्तु उसके पके हुए पत्ते झड़ते भी रहते हैं। फूल अप्रेल व मई में छोटे - छोटे गुच्छों में आते हैं, जो कि हल्के पीले रंग के होते हैं। इसका फल गोल, मोटा, अखरोट के आकार का होता है। कच्चा फल गहरे हरे रंग का तथा पकने पर पीला मटमैला हो जाता है। इसमे एक कठोर गुठली होती है। जिसमें बीज निकलता है। फल का गूदा कड़वा तथा कषैला होता है।



हिंगोट की पत्तियाँ

इसकी लकड़ी कठोर होती है। जिससे कृषि के उपकरणों के हत्थे आदि बनाये जाते हैं। इसकी शाखाओं से खेतों की बाड़ बनाई जाती हैं। इसकी लकड़ी का ईंधन

Scanned with OKEN Scanner

के रूप में कम उपयोग किया जाता है । आदिवासी इसके फल के गूदे को कपड़े धोने में काम लेते हैं। इसके बीज से तेल निकालकर दवाई बनाई जाती है। इसकी गुठली में छेद करके पशुओं के गले में भी बाँधते है। इसे खेत के चारों और बाड़ के रूप में भी उगाते हैं।



हिंगोट का फल

यह सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा हो जाता है। पत्थर की कठोर चट्टानों, मटियार दोमट मिटटी में आसानी से पैदा हो जाता है । पहाड़ों की ढ़लानों के नीचे तलहटी में भी काफी मात्रा में प्राकृतिक रूप से पैदा होता है । बीज से नये पौधे तैयार करके उगाये जा सकते हैं।

अध्ययन करें हिगोंट का पेड़ कहाँ उगा हुआ मिलता है? .....

इसके अन्य उपयोग लिखिये? .....

.....

इसकी पत्ती की बनावट देख कर लिखें? .....

इसके बीजों का क्या उपयोग होता है? .....

इसके फल का आकार कैसा होता है? .....

नई पत्तियाँ किस रंग की होती हैं? .....

इसकी छाल किस रंग की होती हैं? .....

क्षेत्र में पैदा होने वाले वृक्ष व उनके वैज्ञानिक नाम

क्र.स.	वृक्ष का नाम	अन्य स्थानीय नाम	वैज्ञानिक नाम	
1	अरडू	महारूख, एडू	*Ailanthus excelsa*	आइलेन्थस एक्सेलसा
2	अर्जुन	तालवृक्ष	*Terminalia arjuna*	टर्मिनेलिया अर्जुना
3	अमलतास	गरमाला, कजड़याल	*Cassia fistula*	केसिया फिस्टुला
4	अशोक		*Polyalthia longifolia*	पोलियलथिया लोंगिफोलिया
5	आंवला	आमला, आमलकी	*Emblica officinalis*	ऐम्बेलिका ऑफिसिनेलिस
6	इमली		*Tamarindus indica*	टेमेरन्डस इन्डिका
7	कदम्ब	कदम	*Anthocephalus cadamba*	ऐन्थोसिफेलस कदम्बा
8	करंज		*Derris indica*	डेरिस इन्डिका
9	काला खैर	खैरी	*Acacia catechu*	अकेशिया केटचू
10	कूमट	सफेदखैर, कूमटा	*Acacia senegal*	एकेशिया सनेगल
11	कचनार		*Bauhinia variegata*	ब्युहिनिया वैरिगेटा
12	कुटज	इन्द्रजव, खैणी	*Holarrhena antidysenterica*	होलरेना एन्टीडीसैन्टीका
13	खेजड़ी	खेजड़ा, शमी	*Prosopis cineraria*	प्रासोपिस सिनेरेरिया
14	खिरनी		*Manilkara hexandra*	मैनिलकारा हैक्सैन्ड्रा
15	गून्दी		*Cordia gharaf*	कोरडिया गहरफ
16	गूलर		*Ficus glomerata*	फाईकस ग्लोमिरेटा
17	गुलमोहर		*Delonix regia*	डिलोनैक्स रिजिया
18	गूलर		*Commiphora wightii*	कोमीफोरा वाइटिई
19	जामुन		*Syzygium cumini*	साइजियम क्युमिनी
20	जंगल जलेबी		*Pithecellobium dulce*	पिठिसिलोबियम डुलसि
21	जंगली खजूर	खजूर	*Phoenix sylvestris*	फीनिक्स सिल्वेस्ट्रिस
22	जूलीफलोरा	बिलायती कीकर	*Prosopis juliflora*	प्रोसोपिस जुलीफलोरा
23	तेन्दू	टींडूणा	*Diospyros melanoxylon*	डिसपेरस मैलानोक्सिलोन
24	देशी बबूल	कीकर, बोली	*Acacia nilotica*	अकेशिया निलोटिका
25	धोक	धोंकड़ा	*Anogeissus pendula*	एनोगीसेस पेंडुला

Scanned with OKEN Scanner

क्र.स.	वृक्ष का नाम	अन्य स्थानीय नाम	वैज्ञानिक नाम	
26	नीम	नीमड़ी	*Azadirachta indica*	अजाडिराक्टा इन्डिका
27	ढाक	पलाश, छीला, खांकरा, टेसू	*Butea monosperma*	ब्यूटिया मोनोस्पर्मा
28	पीपल	पीपली	*Ficus religiosa*	फाइकस रिलिजिओसा
29	पापड	चुरैल, पापडी	*Holoptelea integrifolia*	होलोपथैलिया इन्टिग्रिफोलिया
30	पीलू	जाल	*Salvadora oleoides*	सलवाडोरा ओलिओडिस
31	बेल	बिल्व/बेलपत्र	*Aegle marmelos*	एग्ले मारमैलस
32	बकायन		*Melia azedarach*	मैलिया अजिडारैच
33	बेर	बेरडी	*Zizyphus mauritiana*	जुजुफस मोरेशियाना
34	बरगद	बड, वटवृक्ष	*Ficus benghalensis*	फाइकस बैंगार्लेसिस
35	बहेडा		*Terminalia bellirica*	टर्मीनेलिया बेलिटिका
36	युकेलिप्टिस	सफेदा	*Eucalyptus Sp.*	युकेलिप्टिस स्पै.
37	रोंझ	सफेद कीकर	*Acacia leucophloea*	अकेशिया ल्यूकोफलोइया
38	रोहिडा		*Tecomella undulata*	टैकोमेल्ला अन्डुलेटा
39	लैसवा	लिसोडा, गून्दा	*Cordia dichotoma*	कोरडिया डाइकोटोमा
40	सहँजना		*Moringa oleifera*	मेरिंगा ओलिफैरा
41	सेमल		*Bombax ciba*	बोम्बेक्स सीबा
42	सिरस	शिरीष	*Albizzia lebbek*	अलबीजिया लेबैक
43	सीताफल	गधफैला, शरीफा	*Annona squamosa*	अन्नोना स्कामोसा
44	सूबबूल		*Leucena leucocephala*	ल्यूसिना ल्यूकासिफेला
45	सालर	शल्लकी	*Boswellia serrata*	बॉस्वेलिया सीरेटा
46	शहतूत	तूंत	*Morus alba*	मोरस एलबा
47	शीशम		*Dalbergia sissoo*	डलबर्जिया सीसू
48	हिंगोट	हिंगोटा	*Balanites aegyptiaca*	बैलन्टिस इजिप्टिका

Scanned with OKEN Scanner